पृष्ठ संख्या–294

अभ्यास प्रश्न-पत्र–2

खंड-'अ' बहुविकल्पीय प्रश्न

अपठित गद्यांश

1. (*i*) (घ) (*ii*) (क) (*iii*) (ग)
   (*iv*) (क) (*v*) (ग)

अपठित पद्यांश

2. (*i*) (ग) (*ii*) (ग) (*iii*) (क)
   (*iv*) (ग) (*v*) (ग)

अथवा

(*i*) (ख) (*ii*) (ग) (*iii*) (ख)
(*iv*) (घ) (*v*) (घ)

व्यावहारिक व्याकरण

3. (*i*) (ख) (*ii*) (क) (*iii*) (क)
   (*iv*) (ग) (*v*) (ख)
4. (*i*) (ग) (*ii*) (ख) (*iii*) (ग)
   (*iv*) (ग) (*v*) (ख)
5. (*i*) (क) (*ii*) (ग) (*iii*) (ख)
   (*iv*) (ख) (*v*) (ख)
6. (*i*) (क) (*ii*) (घ) (*iii*) (ख)
   (*iv*) (घ) (*v*) (ग)

खंड-'ब' (वर्णनात्मक प्रश्न)

लेखन

उत्तर–

7. (क) अनुशासन की समस्या

आधुनिक युग में छात्रों के बीच बढ़ती हुई अनुशासनहीनता चिंता का विषय है। छात्रों में इस कदर अनुशासनहीनता बढ़ गई है कि छात्र अपने सम्माननीय शिक्षकों तक को भी अपमानित करने से पीछे नहीं हट रहे हैं। ऐसे में सवाल उठता है कि शैक्षिक वातावरण इस तरह का आखिर क्यों होता जा रहा है? कई शिक्षाविदों का मानना है कि वर्तमान शिक्षण संस्थाओं में अनुशासनहीनता अचानक पैदा नहीं हुई है, अपितु यह समाज में गिरते हुए मूल्य-बोध का ही दुष्परिणाम है। इसका एक कारण यह भी है कि इस भाग-दौड़ भरी ज़िंदगी में माता-पिता के पास बच्चों की देखभाल के लिए पर्याप्त समय नहीं है। अत: वे अनुशासन के साँचे में बच्चों को नहीं ढाल पाते हैं। साथ-साथ शिक्षण संस्थानों का वातावरण भी अनुशासित जीवन के लिए प्रतिकूल है। इससे छात्रों में स्वच्छता का विकास होने लगा है और वे अनुशासन से दूर होने लगे हैं। फलत: वे असभ्य और आपराधिक घटनाओं को अंजाम देने में पीछे नहीं हटते हैं। उनके लिए ये सहज क्रियाकलाप बनकर रह गया है। इससे उनकी पढ़ाई बाधित हो रही है। वे अपने लक्ष्य से भटक गए हैं। किसी भी देश की युवा पीढ़ी का इस तरह भटक जाना उसके विकास के लिए खतरनाक है। अत: बच्चों में अनुशासन का बीजारोपण बचपन से ही करने का प्रयास करना चाहिए। शिक्षकों को सही मार्गदर्शन करते हुए छात्रों को नैतिक एवं भावनात्मक बदलाव हेतु प्रेरित करना चाहिए। इस प्रकार अभिभावकों एवं शिक्षकों का योगदान बच्चों/छात्रों को अनुशासित बनाने में अहम योगदान देगा।

(ख)परहित सरिस धर्म नहिं भाई

जी हाँ, 'परहित' या 'परोपकार' के समान कोई धर्म नहीं है। अपने लिए तो सभी जीते हैं, पर जिसे 'परहित' की चिंता होती है, उसका जीवन सफल हो जाता है। परोपकार का सबसे बड़ा उदाहरण तो प्रकृति है। रहीम ने भी कहा है– 'तरुवर फल नहीं खात हैं, सरवर पिएँ न पानि' अर्थात वृक्ष अपने खाने के लिए 'फल' उत्पन्न नहीं करते और सरोवर अपने लिए 'जल' एकत्रित नहीं करता। इनके अलावा मेघ भी इस धरती के कल्याण के लिए बरसते हैं। वायु इसलिए चलती है कि हमारा जीवन चलता रहे। कहने का तात्पर्य यही है कि प्रकृति का कण-कण हमें 'परहित' के लिए प्रेरित कर रहा है। मनुष्य और पशु में अंतर करने वाली भावना है–'परोपकार'। परोपकारी व्यक्ति को समाज अपनी आँखों पर बिठाता है। अत: जो दूसरों के हित की चिंता नहीं करता, वह तो पशु के समान है।

(ग) पत्र-पत्रिकाओं के नियमित पठन के लाभ

मनुष्य जिज्ञासु एवं ज्ञान-पिपासु जीव है। अत: विभिन्न साधनों एवं स्रोतों से अपनी

ज्ञान-पिपासा शांत करता आया है। ऐसे ही स्रोतों या साधनों में सर्वाधिक अहम साधन हैं– पत्र-पत्रिकाएँ। ये ज्ञानवर्धन के साथ-साथ मनोरंजन के भी आम साधन हैं। पत्र-पत्रिकाओं के नियमित अध्ययन से पढ़ने की स्वस्थ आदत का विकास होता है। प्रायः यह देखा गया है कि छात्र अपनी पाठ्यक्रम की पुस्तकें पढ़ने में टाल-मटोल करते हैं। ऐसे में उनमें पढ़ने की आदत विकसित करने में पत्र-पत्रिकाएँ अहम भूमिका निभाती हैं। इनमें छपी कहानियाँ, चुटकुले, आकर्षक चित्र उन्हें पढ़ने के लिए विवश करते हैं। यह आदत धीरे-धीरे क्रमशः बढ़ती जाती है। फलस्वरूप उनके अंदर अपने पाठ्यक्रम के प्रति भी लगाव उत्पन्न हो जाता है। इस प्रकार पत्र-पत्रिकाएँ मानव-जाति के बौद्धिक विकास का सर्वोत्तम साधन हैं। इन्हें ज्ञान एवं मनोरंजन का खजाना कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। कुल मिलाकर पत्र-पत्रिकाएँ हमारी सच्ची मित्र हैं। ये हमारे समक्ष ज्ञान के मोती परोसती हैं, जिन्हें चुनना हमारी बौद्धिक क्षमता पर निर्भर करता है।

8. विद्युत मीटर खराब होने की वजह से नया मीटर लगवाने के लिए बिजली विभाग के अधिकारी को पत्र–

अ०ब०स० नगर
फ़रीदाबाद
दिनांक : 7 जून, 20XX
सेवा में
मंडल इंचार्ज
दक्षिण हरियाणा विद्युत वितरण निगम
फ़रीदाबाद

विषय– खराब विद्युत मीटर को बदलवाने के संबंध में।

महोदय

निवेदन है कि मेरे आवास पर आपके कार्यालय द्वारा जो मीटर लगाया गया था, वह ठीक से कार्य नहीं कर रहा। पिछले माह मीटर रीडिंग के लिए जो कर्मचारी आए थे, उन्होंने भी कहा था कि मीटर खराब है, इसे बदलवाने के लिए मैं आवेदन करूँ।

आप चाहे तो किसी उपयुक्त कर्मचारी को भेजकर मीटर-चेक करा सकते हैं। अनुरोध है कि इस संबंध में यथाशीघ्र निर्णय लेने की कृपा करें तथा मेरे आवास पर नया मीटर लगाए जाने के आदेश जारी करें।

सधन्यवाद!
भवदीय
क०ख०ग०

अथवा

बहन का विवाह तय होने का समाचार देते हुए मामा जी को पत्र–

परीक्षा भवन

नई दिल्ली
दिनांक : 15 अप्रैल, 20XX
सेवा में
आदरणीय मामा जी
सादर प्रणाम!
मैं आशा करता हूँ कि आप स्वस्थ और प्रसन्न रहकर अच्छे दिन व्यतीत कर रहे होंगे। हम सब भी यहाँ सकुशल हैं।
आगे समाचार यह है कि दीदी की शादी की तिथि तय हो चुकी है। शुभ-विवाह का मुहूर्त 15 जुलाई को निश्चित हुआ है। पिता जी और माता जी का अनुरोध है कि आप विवाह से कम-से-कम एक सप्ताह पूर्व यहाँ आ जाएँ, ताकि वैवाहिक कार्यक्रम भली प्रकार से संपन्न हो सके।
हम सभी को विश्वास है कि आप समयानुसार यहाँ उपस्थित होकर इस शादी के कार्यक्रम को अपनी देखरेख में संपन्न करवाएँगे। शेष सब सानंद है।
पत्रोत्तर की प्रतीक्षा में।
आपका अपना
क०ख०ग०

9. विद्यार्थी स्वयं करें।
10. विद्यार्थी स्वयं करें।

अथवा

प्रधानाचार्य की ओर से गांधी जयंती के उपलक्ष्य में शुभकामना संदेश–

संदेश

पूर्वाह्न: 9 बजे
1-10-20XX

समस्त अध्यापक एवं छात्रगण

गांधी जयंती के शुभ अवसर पर मैं आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ और आप सबको गांधी जी के बताए मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित होने हेतु ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ।

रघुपति राघव राजा राम,
पतित पावन सीता राम।
ईश्वर अल्लाह तेरे नाम,
सबको सन्मति दे भगवान॥

इसी के साथ एक बार पुन: गांधी जयंती की शुभकामनाएँ।
अशोक तिवारी
(प्रधानाचार्य)